जब आपको गुरु के रूप में एक वास्तविक महापुरूष मिलता है, तो आपको अपने आध्यात्मिक गुरु को ईश्वर के समान मानना चाहिए और जैसी भक्ति भगवान की करते हो ठीक वैसी ही भक्ति गुरू की भी करनी चाहिए। लेकिन ये निश्चित करना जरूरी है कि संत वास्तविक है। इसके बारे में हम पहले विवेचन कर चूके है।

हिंदू कहते हैं कि आध्यात्मिक गुरु स्वयं भगवान का दूसरा रूप है क्योंकि वास्तविक संत की क्रियाएं सीधे भगवान द्वारा संचालित होती हैं और ऐसे संत के पास भगवान की सभी शक्तियां होती हैं। भगवान और वास्तविक संत की सभी क्रियाएं दिव्य हैं। भगवान और संत अंतर्यामी होने के कारण उनकी जीव के मन तक पहुंच है और वे जीव के सभी ज्ञात और छिपे हुए लक्षणों के बारे में पूरी तरह से जानते हैं। ईश्वर और संत के कार्यों को मायिक या भौतिक दृष्टिकोण से नहीं देखा जाना चाहिए, हालांकि कोई मायिक जीव दिव्यता का अनुभव नहीं कर सकता। यह ध्यान में रखना चाहिए कि महापुरूष या संत के बाह्य भौतिक कार्यों का दिव्य अर्थ है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भगवान का अर्थ केवल भगवान को पाने पर समझा जा सकता है। एक चार साल का लड़का सेक्स शब्द का अर्थ नहीं जानता, हालांकि वह इस शब्द को जान सकता है। निश्चित आयु के बाद ही अर्थ स्पष्ट होगा। इसी प्रकार मायिक जीव दिव्य शब्द को जान सकते हैं लेकिन दिव्य का वास्तविक अर्थ तभी स्पष्ट होगा जब मन दिव्यता को बनाए रखने में सक्षम होगा। दिव्यता एक अनुभव है और इसलिए उन मन तक सीमित है जिनके पास यह अनुभव है।

संत कहते हैं, 'ईश्वर ही आनंद है।' लेकिन वह आपको उस दिव्य आनंद का एहसास नहीं करा सकते जब तक कि मन शुद्ध एवं दिव्य न हो। इसलिए, यह तय होने के बाद कि संत वास्तविक है, उसके किसी भी कार्य पर कोई सवाल या संदेह नहीं उठाया जाना चाहिए। उसकी सभी क्रियाएं जीवों को कष्टों के खतरनाक अंधेरे से उठाने के लिए ही होती हैं। हिंदू का कहना है कि 'संत या भगवान के कार्यों की नकल नहीं की जानी चाहिए', क्योंकि ये क्रियाएं वैसी नहीं हैं जैसी वे दिखती हैं। संत या भगवान के कार्य हमेशा जीव की आंतरिक मन की स्थिति से संबंधित होते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन में भी एक ही गतिविधि के अलग-अलग उद्देश्य और परिणाम हो सकते हैं। उदाहरण के लिए चाकू पेट में भोकने की क्रिया। एक हत्यारे को फांसी दी जाती है जबकि एक कुशल चिकित्सक को उसी कार्रवाई के लिए सम्मानित किया जाता है। दिव्य क्रिया जीव को भगवान की ओर ले जाने वाली है जबकि भौतिक या मायिक क्रिया जीव को भगवान से दूर ले जाने वाली है।

चूंकि संत की सभी क्रियाएं दिव्य हैं, इसलिए उन्हें ईश्वर के समान माना जाना चाहिए या दूसरे शब्दों में संत स्वयं ईश्वर हैं। अर्थात्, संत और ईश्वर की समानता अनिवार्य है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132